II Meeting [P] 38

ख़्वाजा मुईनुददीन चिश्ती उर्दू, अरबी–फ़ारसी यूनिवर्सिटी, लखनऊ
की एग्जीक्यूटिव काउन्सिल की दूसरी मीटिंग, दिनांक 21 सितम्बर 2012 की कार्रवाई

ख़्वाजा मुईनुददीन चिश्ती उर्दू, अरबी–फ़ारसी यूनिवर्सिटी, लखनऊ की एग्जीक्यूटिव काउन्सिल (EC) की दूसरी मीटिंग, दिनांक 21 सितम्बर 2012 को डा0 राम मनोहर लोहिया लॉ यूनिवर्सिटी, लखनऊ में 10 बजे सुबह, वाइस चांसलर की सदारत में मुनकिद हुई। मीटिंग में शामिल होने वाले मा0 सदस्यों की सूचि निम्न है–

1	डा0 अनीस अंसारी	कुलपति, ख़्वाजा मुईनुददीन चिश्ती उर्दू, अरबी–फ़ारसी यूनिवर्सिटी, लखनऊ	सदर
2	प्रो0 मो0 मियां	कुलपति, मौलाना आजाद नेशलन उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद	सदस्य
3	प्रो0 नसीर अहमद खान	सीनियर एडवाइज़र, कोआर्डिनेटर उर्दू प्रोग्राम, इन्दिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी	सदस्य
4	प्रो0 शब्बीर अहमद	साबिक़ सदर शोबा अरबी, लखनऊ वि0वि0	सदस्य
5	प्रो0 इनाम क़ादिर	कानून, कन्ट्रोलर ऑफ इग्जामिनेशन, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली	सदस्य
6	प्रो0 ज़हीर हुसैन जाफरी	तारीख़, दिल्ली यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली	सदस्य
7	डा0 मेराज अहमद	हिन्दी, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़	सदस्य
8	जनाब अनवर जलालपुरी	ढ़िंगरा अपार्टमेन्ट, लाल कुंआ, लखनऊ	सदस्य
9	डा0 मो0 रफीक़	अलीगंज, बांदा, उ0प्र0	सदस्य
10	जनाब ख़्वाजा मो0 यूनुस	सी ब्लाक, इन्दिरा नगर, लखनऊ	सदस्य
11	जनाब अशोक कुमार	रजिस्ट्रार, ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती उर्दू, अरबी–फ़ारसी यूनिवर्सिटी, लखनऊ	सदस्य
12	जनाब एस0सी0 संगल	वित्त अधिकारी, ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती उर्दू, अरबी–फ़ारसी यूनिवर्सिटी, लखनऊ	–
13	डा0 जी0आर0 यादव	ओ0एस0डी0, ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती उर्दू, अरबी–फ़ारसी यूनिवर्सिटी, लखनऊ	–

विजय चन्द्र चतुर्वेदी अपनी वालिदा की बीमारी की वजह से मीटिंग में शरीक नहीं हो सके लेकिन वाइस चांसलर का बाखबर किया कि एजेंन्डे की तजवीज़ों से इत्तिफाक़ रखते हैं।

वाइस चांसलर, ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती उर्दू, अरबी–फ़ारसी यूनिवर्सिटी, लखनऊ ने तमाम एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल के मा0 सदस्यों का इस्तेक़बाल किया और यूनिवर्सिटी के तरक़्क़ियाती कामों से बाखबर किया और मा0 सदस्यों ने यूनिवर्सिटी के तामीरी कामों की तारीफ की।

कुलसचिव
ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
उर्दू, अरबी, फ़ारसी विश्वविद्यालय, लखनऊ

2.1 तारीख़ 19 अगस्त 2010 को डा0 राम मनोहर लोहिया नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, लखनऊ के मीटिंग हॉल में हुई एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल की पहली मीटिंग में लिए गए फ़ैसलों की तस्दीक़ (पुष्टि)–

तारीख 19 अगस्त 2012 की पहली मीटिंग की कार्रवाई की मा0 सदस्यों ने तस्दीक की। प्रो0 मो0 मियां (कुलपति, मौलाना आजाद नेशलन उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद) ने मशवरह दिया कि एजेन्डे को हतमी शक्ल देने से पहले उसे रजिस्ट्रार के दस्तख़त से तमाम मा0 सदस्यों के पास भेजा जाया करे। अगर सदस्यों के ज़रिए कोई तबसरह मिले तो उसे भी शामिल किया जाये और एजेन्डे को आख़री शक्ल देने के बाद उसकी तस्दीक़ वाइस चांसलर के ज़रिए होनी चाहिये।

2.2 **19.08.2010 को एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल की पहली मीटिंग में लिये गये फ़ैसलों पर की गई कार्रवाई:–**

फ़ैसला	कार्रवाई
1. यूनिवर्सिटी में अगले तालीमी साल जुलाई 2011 से कुछ चुने हुए कोर्सेज़ की पढ़ाई कराई जाएगी। इनमें से कुछ अहम कोर्सेज़ इस तरह हैः बी0एड0, बी0काम0, बी0सी0ए0, फ़ारसी और अरबी में ट्रांसलेटर और इंटरप्रेटर के दो साल के डिप्लोमा कोर्स, हिन्दुस्तानी ज़बानों के अदब की कम्पैरेटिव स्टडी, पांच साल का क़ानून का इंटीग्रेटेड कोर्स, 2 साल और 5 साल का इंटीग्रेटेड मैनेजमेन्ट कोर्स, मास कम्यूनिकेशन और सहाफत (पत्रकारिता), सियाहती कोर्स, आयुर्वेद और यूनानी तिब्बी कोर्स।	हुकूमत के ख़त नं0–1477 / सत्तर–4–2012–3(47) / 2010 तारीख़ 24 अगस्त 2012 के ज़रिए असातिज़ह (शिक्षकों) की 74 असामियां मंज़ूर की गई हैं, जिनमें उर्दू, अरबी, फ़ारसी के अलावा हिन्दी, अंग्रेज़ी, होम साइंस, जुग़राफ़िया (भूगोल), सियासियात (राजनीति–शास्त्र), मआशियात (अर्थशास्त्र), तारीख़ (इतिहास), फ़िज़िकल एजुकेशन, कामर्स (वाणिज्य), मास कम्युनिकेशन एण्ड जर्नलज़्मि (जनसंचार और पत्रकारिता), कम्प्यूटर अप्लीकेशन, बी0एड0 और एम0बी0ए0 के लिए ओहदे मंज़ूर किये गये हैं। हुकूमत के मुताबिक़ फिलहाल पहले तालीमी साल के पहले साल में 50 फ़ीसद यानी प्रोफेसर के 5 (उर्दू, अरबी, फ़ारसी, कामर्स और एम0बी0ए0), एसोसिएट प्रोफेसर के 10 (उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी, जुग़राफ़िया, सियासियात, कामर्स, बी0एड0, एम0ब0ए0 तथा मास कम्युनिकेशन एण्ड जर्नलिज़्म) और असिस्टेन्ट प्रोफेसर के 22 (उर्दू, अरबी, फ़ारसी, होम साइन्स, जुग़राफ़िया, मआशियात, इतिहास, फिज़िकल एजुकेशन, कामर्स, बी0एड0, एम0बी0ए0, मास कम्युनिकेशन एण्ड जर्नलिज़्म और कम्प्यूटर अप्लीकेशन) के ओहदों पर भर्ती का अमल शुरू कर दिया गया है। ❖ **एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल के मा0 सदस्यों ने मन्ज़ूरी दी।**
बाक़ी कोर्सेज़ जैसे आयुर्वेद और यूनानी, वोकेशनल ट्रेनिंग एण्ड रिसर्च, क़ानून (3 साला (वर्षीय) और 5 साला कोर्स), सियाहत (Tourism) और हॉस्पिटेलिटी, फ़ासलाती (Distance) एजूकेशन एण्ड ई–लर्निंग, मुख़्तलिफ	**मुख़्तलिफ हिन्दुस्तानी ज़बानों का तकाबुली मुताला और उर्दू, अरबी व फ़ारसी में इन्टरप्रेटर और ट्रांसलेटर वग़ैरह के कोर्सेज़ चलाने पर जल्दी कार्रवाई की जायेगी और हस्बे ज़रूरत हुकूमत यूपी से मज़ीद ओहदों की मन्ज़ूरी के लिये गुज़ारिश की**

उर्दू, अरबी, फ़ारसी विश्वविद्यालय, लखनऊ

हिन्दुस्तानी जबानों का तकाबुली मुताला (तुलनात्मक अध्ययन), और उर्दू, अरबी और फ़ारसी में इन्टरप्रेटर और ट्रांसलेटर वगैरह के लिए हुकूमत से मजीद ओहदों की मंजूरी के लिये गुज़ारिश की जा रही है।	जायेगी।
2. ये यूनिवर्सिटी उ0प्र0 यूनिवर्सिटी एक्ट 1973 के तहत क़ायम की गई है। इस एक्ट की दफ़ा–7 में एक नई दफ़ा–7(ख) का इज़ाफ़ा किया गया है जिसमें यह इन्तेज़ाम किया गया है कि रियासती हुकूमत के ज़रिए नोटिफ़िकेशन के वसीले से बाइख्तियार किए जाने पर यह यूनिवर्सिटी आला तालीम मोहय्या कराने वाले अक़लियती तालीमी इदारों को इल्हाक़ (सम्बद्धता), मदद और सहूलियतें देगी। इस दफ़ा को लागू करने के लिए यूनिवर्सिटी के ज़ाब्तों (Statutes) का ड्राफ़्ट हुकूमत के सामने पेश किया जा चुका है। अक़लियती तालीमी इदारों के इल्हाक़, मदद और सहूलियात देने के काम में तेज़ी लाई जाए।	हुकूमत से उ0प्र0 यूनिवर्सिटी एक्ट 1973 की दफ़ा–7 (ख) के तहत इस सिलसिले की नोटिफिकेशन जारी करने की गुज़ारिश की जा चुकी है कि आला तालीम मुहैय्या कराने वाली उर्दू, अरबी और फ़ारसी इदारों का इल्हाक़ (सम्बद्धता) करने, मदद और सहूलियतें देने के लिए इजाज़त दी जाए। (इस तअल्लुक़ से हुकूमत को तारीख़ 25 नवम्बर 2011, 26 मार्च 2012, 9 अगस्त 2012 वग़ैरह को ख़त भेजे जा चुके हैं)। अब चूंकि पढ़ाई शुरू होने जा रही है इसलिए फिर से हुकूमत से गुज़ारिश की जाएगी। ❖ **मा0 सदस्यों को इस फैसले की कार्रवाई से अगली मीटिंग में बाखबर किया जायेगा।**
3. यूनिवर्सिटी में उर्दू, अरबी–फ़ारसी और दूसरी ज़बानों की तालीम और रिसर्च के अलावा ऐसे कोर्स चलाए जाने का मंसूबा है जिनके	उर्दू, अरबी, फ़ारसी के अलावा जैसा कि पैरा–1 में वज़ेह किया गया है, फिलहाल 16 मौज़ूआत (विषयों) पर पढ़ाई शुरू करने के लिए हुकूमत के

कुलसचिव
ख्वाजा ...
उर्दू, अरबी, फारसी विश्वविद्यालय, लखनऊ

M-IYS

	जरिए तालिब-इल्मों को तालीम देने के साथ-साथ बारोजगार बनाया जा सके। नये कोर्सेज जैसे बायोटेक्नोलॉजी, नैनोटेक्नोलॉजी, इन्फार्मेटिक्स साइंसेज, माहौलियात (पर्यावरण) और लाइफ साइंसेज वगैरह की पढ़ाई का भी इन्तेजाम किया जाए।	जरिये असातिज़ह के ओहदे मंजूर किए गए हैं। बाकी कोर्सेज जैसे आयुर्वेद और यूनानी, वोकेशनल ट्रेनिंग एण्ड रिसर्च, कानून (3 साला और 5 साला निसाब (कोर्स)), सियाहत (टूरिज़्म) और हॉस्पिटेलिटी, बायोटेक्नोलॉजी, नैनोटेक्नोलॉजी, इंफार्मेटिक्स साइंसेज, माहौलियात (पर्यावरण), लाइफ साइंसेज, इंजीनियरिंग वगैरह पेशावाराना कोर्सेज के लिए असातिज़ह के ओहदे के लिये हुकूमत से दुबारा गुज़ारिश की जाएगी। ❖ मा0 सदस्यों को इस फैसले की कार्रवाई से अगली मीटिंग में बाख़बर किया जायेगा।
4.	चूंकि यूनिवर्सिटी में भाषायी और ग़ैर भाषाई दोनों तरह के कोर्सेज़ चलाने का मंसूबा है इसलिए मुनासिब होगा कि जो उम्मीदवार किसी भी कोर्स में दाख़िला लेना चाहते हों उनके लिए लाज़िम हो कि वो हाईस्कूल की सतह पर उर्दू, अरबी या फ़ारसी में से किसी एक ज़बान को पढ़ चुके हों और साथ ही जिस कोर्स में दाख़िला लेना चाहते हैं उसमें भी उन्हें इन ज़बानों में से किसी एक में इज़ाफ़ी पर्चा पास करना ज़रूरी होगा। ऐसा इन्तज़ाम करने से ग़ैर भाषायी कोर्सेज़ के साथ में उर्दू, अरबी या फ़ारसी की तालीम को फ़रोग देने का असल मक़सद भी पूरा होगा।	❖ यह तजवीज़ मन्जूर की गई कि इस यूनिवर्सिटी के किसी भी कोर्स में जो तलबा/तालिबात दाखिला लेना चाहते हों उनके लिये लाज़िम होगा कि वह उर्दू, अरबी या फारसी में से किसी एक ज़बान की अमली जानकारी रखते हों। इसके अलावा सभी कोर्सेज़ में दाखिला लेने वाले सभी तलबा व तालिबात को अपने कोर्स के अलावा उर्दू, अरबी या फारसी में से किसी एक ज़बान को इज़ाफी मज़मून के तौर पर पढ़ना और उस पर्चे को पास करना होगा, उसके नम्बर मार्कशीट में जोड़े जायेंगे।
5.	यूनिवर्सिटी में उर्दू, अरबी या फ़ारसी के अलावा हिन्दुस्तानी ज़बानों की तक़ाबुली तालीम का स्कूल (School of Comparative Indian Literature) को अमेरिकी स्कूल की तर्ज़ पर कायम किया जाना मुनासिब होगा। स्कूल ऑफ उर्दू स्टडीज़ के तहत सेन्टर ऑफ कम्परेटिव इण्डियन लिट्रेचर क़ायम किया जाय जिसके तहत उर्दू और दूसरी हिन्दुस्तानी ज़बानों जैसे हिन्दी, कश्मीरी, पंजाबी, सिंधी, मराठी, बंगाली, मलयाली और संस्कृत वग़ैरह के साहित्य का कम्परेटिव मुताला शुरू किया जाए। स्पेनी, चीनी, जरमन, फ़्रांसीसी और जापानी ज़बानों के कोर्स भी शुरू किए जाएं।	हुकूमत से इन कोर्सेज़ को चलाने के लिए अलग से असातिज़ह के ओहदे मंजूर करने के लिये गुज़ारिश की जायेगी। अमेरिकी स्कूलों की तर्ज़ पर फैकल्टी की तश्कील के लिए भी हुकूमत से दरख़्वास्त की जाएगी। मौजूदा क़ानून में डिपार्टमेन्ट का तसव्वुर रखा गय है। ❖ उर्दू, हिन्दी, अरबी, फारसी और अंग्रेज़ी ज़बान व अदब के तक़ाबुली मुताला का कोर्स जल्दी शुरू किया जायेगा। बक़िया ज़बानों के कोर्स के लिये असातज़ा के ओहदों की मन्जूरी के लिये हुकूमत से गुज़ारिश की जायेगी।
6.	जदीद (माडर्न) फ़ारसी, अरबी और उर्दू की इत्मीनानबख़्श पढ़ाई यक़ीनी बनाने के लिए इन ज़बानों के तलफ़्फ़ुज़ सिखाने के लिए लिसानी (भाषायी) लेबोरेटरी क़ायम किया जाना ज़रूरी है।	❖ मा0 सदस्यों को इस फैसले की कार्रवाई से अगली मीटिंग में बाख़बर किया जायेगा।
7.	यूनिवर्सिटी में हिन्द-इस्लामी मख़्तूतात	❖ हिन्द-इस्लामी मख़्तूतात (पाण्डुलिपियों) की

कुलसचिव
ख्वाजा ...
उर्दू, अरबी, फारसी ... लखनऊ

(पाण्डुलिपियों) की डिजिटल लाइब्रेरी कायम करने की तजवीज सही है। इसके जरिए रिसर्च करने वालों को इण्टरनेट के वसीले से मख़्तूतात को फ़ीस अदायगी की बुनियाद पर इस्तेमाल करने की सहूलियत मिल सकेगी। मख़्तूतात के तर्जुमे उर्दू, हिन्दी और अंग्रेज़ी में कराए जाएं।	डिजिटल लाइब्रेरी कायम करने के लिए लाइब्रेरियन और दूसरे साज व सामान की जरूरत पड़ेगी। इस पर अलग से प्रोजेक्ट तैयार करने की जरूरत है और हुकूमत से लाइब्रेरियन का ओहदा मंजूर करने के लिये गुज़ारिश की गई है।
8. अभी यूनिवर्सिटी के पास सिर्फ 30 एकड़ ज़मीन है जो काफी नहीं हैं। हुकूमत ने 25 एकड़ जमीन और हासिल करने की तजवीज़ पर मंजूरी दे दी है। आला सतह पर लिए गए फैसले के मुताबिक़ वाइस चांसलर की क़यादत में निर्माण निगम के आला अफ़सरों ने ग्रेटर नोएडा में ज़ेरे तामीर गौतमबुद्ध यूनिवर्सिटी के कैम्पस को 19 जुलाई, 2010 को मौक़े पर देखा। इन अफसरों का मशवरा है कि कम से कम 125 एकड़ ज़मीन और हासिल किया जाना ज़रूरी लगता है। इस पर हुकूमत की मंजूरी जल्द हासिल की जाए।	यू0पी0 हुकूमत ने यूनिवर्सिटी कैम्पस और रीतापुर–हरदोई बाईपास रोड के बीच वाक़े (स्थित) तक़रीबन 28.5 एकड़ प्राइवेट जमीन को हासिल (अधिग्रहण) करने और तक़रीबन 2.2 एकड़ ग्राम सभा की ज़मीन को दुबारा वापस हासिल करने (पुनर्ग्रहण) की तजवीज़ को मंजूरी दे दी है। इसके अलावा यूनिवर्सिटी के दूसरे जानिब तक़रीबन 16.8 एकड़ सीलिंग की ज़मीन दोबारा हासिल (पुनर्ग्रहण) की जायेगी। यूनिवर्सिटी के दूसरी तरफ तक़रीबन 120 एकड़ ज़मीन लखनऊ डेवलपमेन्ट अथॉरिटी के ज़रिये से मुस्तक़बिल की ज़रूरतों को हासिल करने की तजवीज़ हुकूमत में ज़ेरे ग़ौर है। दोनों तजावीज़ पर तेज़ी से कार्रवाई करने के लिए मुतअल्लिक़ अफसरान से राबिता क़ायम किया जा रहा है। ❖ **मा0 सदस्यों को इस फैसले की कार्रवाई से अगली मीटिंग में बाख़बर किया जायेगा।**
9. यूनिवर्सिटी के ज़रिए ऐसे कोर्सज़ का इन्तख़ाब किया जाना बेहतर होगा जिनको पढ़ने के बाद तलबा को आसानी से बारोज़गार बनाया जा सके। इसलिए पेशावराना (Vocational) कार्सेज़ को तरजीह दी जाएगी।	डिपार्टमेंन्ट ऑफ वोकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग के असातिज़ह के ओहदे की मंजुरी की तजवीज़ हुकूमत को भेजी गयी थी। अभी असातिज़ह के ओहदे मंजूर नहीं हुए हैं। हुकूमत से दुबारा गुज़ारिश की जाएगी। इस बीच मंजूर ओहदों से वोकेशनल कोर्स चलाने के इम्कानात पर ग़ौर किया जायेगा। ❖ **मा0 सदस्यों को इस फैसले की कार्रवाई से अगली मीटिंग में बाखबर किया जायेगा।**
10. यूनिवर्सिटी के डिपार्टमेन्ट/स्कूलों का आला लियाक़त के मरकज़ (Centre of Excellence) की शक्ल में क़ायम किया जाए और चलाया जाए। इसके लिए दूसरी आला दर्जे की यूनिवर्सिटियों से इश्तराक (Collaboration) क़ायम किया जाए।	इस पर तदरीसी (शिक्षकों)/ग़ैर तदरीसी (शिक्षणेत्तर) ओहदों पर तक़र्रुरी (तैनाती) के बाद मुमकिन कार्रवाई की जाएगी। ❖ **मा0 सदस्यों को इस फैसले की कार्रवाई से अगली मीटिंग में बाखबर किया जायेगा।**
11. यूनिवर्सिटी के ज़रिए इग्नू (Indira Gandhi	मोरख़ा 23 मई 2011 को इग्नू के साथ MoU हो

कुलसचिव
ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
उर्दू, अरबी, फारसी विश्वविद्यालय, लखनऊ

National Open University) दिल्ली, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद और अन्नामलाई यूनिवर्सिटी, चेन्नई, की तरह खतोकिताबत के वसीले से मुरासलाती (पत्राचार) कोर्स और इन्टरनेट के ज़रिए ऑन लाइन पढ़ाई का इन्तजाम करना चाहिए। मुरासलाती और ऑन लाइन सिस्टम से उर्दू, अरबी और फ़ारसी के नये पढ़ने वालों, जिन्होंने स्कूल की सतह पर ये ज़बाने नहीं पढ़ी हैं को भी इन ज़बानों को सीखने की सहूलियत मिल सकेगी।	चुका है। तदरीसी/गैर तदरीसी ओहदों पर तकर्रुरी होने के बाद इस पर कार्रवाई की जाएगी। ❖ **मा0 सदस्यों को इस फैसले की कार्रवाई से अगली मीटिंग में बाखबर किया जायेगा।**
12. वाइस चांसलर के आफिस को किसी प्राइवेट इमारत में एक जगह क़ायम करने से तलबा और दूसरे लोगों को आसानी होगी। इसलिए जल्द ही मुनासिब इमारत किराए पर हासिल की जाए।	वाइस चांसलर, रजिस्ट्रार और फाइनेंस आफिसर के दफ्तरों ने दिसम्बर 2011 से यूनिवर्सिटी के गेस्ट हाउस में काम करना शुरू कर दिया है। ❖ **मा0 सदस्यों को इस फैसले की कार्रवाई से अगली मीटिंग में बाखबर किया जायेगा।**
13. ये फ़ैसला किया जा चुका है कि मोरख़ा 15 जनवरी, 2011 को एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लाक और एकेडमिक ब्लाक की दो–दो मंज़िलों और गेस्ट हाउस व वाइस चांसलर लाज का इफ़्तिताह मोहतरमा वज़ीर आला के मुबारक हाथों से कराया जाए।	अभी एकेडमिक ब्लाक की दो मंज़िलों और गेस्ट हाउस का इफ़्तिताह (उदघाटन) मोहतरम वज़ीर आला से कराए जाने के लिये आगे की कार्रवाई की जायेगी। एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लाक और वी0सी0 लाज की तामीर जल्द कराने के लिए हुकूमत से रक़म मंजूर कराने की कार्रवाई चल रही है। ❖ **मा0 सदस्यों को इस फैसले की कार्रवाई से अगली मीटिंग में बाखबर किया जायेगा।**
14. सूबे में मदरसों के ज़रिए दसवीं और बारहवीं क्लास तक पढ़ाई अरबी, फ़ारसी या उर्दू के वसीले से कराई जा रही है। मदरसों के इन कोर्सेज़ को उ0प्र0 हाईस्कूल और इण्टरमीडिएट बोर्ड या सी0बी0एस0सी0 /आई0सी0एस0सी0 के ज़रिए तसलीम नहीं किया गया है। इसके सबब मदारिस के 10+2 की तालीम पाने वाले तलबा को डिग्री सतह की पढ़ाई करने के लिये बहुत महदूद रास्ते मिल पाते हैं। ऐसे तलबा को आम डिग्री कोर्सेज़ की पढ़ाई करने की सहूलियत देने के लिए एक साल ब्रिज कोर्स की शुरूआत की जानी चाहिए जिनमें उन मज़मूनों की पढ़ाई करायी जाए जो मदारिस में कोर्स में शामिल नहीं थे। ब्रिज कोर्स पास करने के बाद मदारिस के 10+2 सर्टिफ़िकेट को आगे की पढ़ाई के लिए तसलीम किया	मदारिस के 10+2 पास तालिबइल्मों के लिए ब्रिज कोर्स और दाख़िला टेस्ट की शुरूआत तदरीसी और ग़ैर तदरीसी ओहदों की तक़र्रुरी के बाद की जा सकेगी। ❖ **मा0 सदस्यों को इस फैसले की कार्रवाई से अगली मीटिंग में बाखबर किया जायेगा।**

कुलसचिव
ख्वाजा ...
उर्दू, अरबी, फारसी ... लखनऊ

जाए। दूसरा तरीका यह भी हो सकता है कि मदरसे के 10+2 पास करने वाले तलबा को डिग्री सतह की पढ़ाई मुहैय्या कराने के लिए ऐसा दाखिला टेस्ट शुरू किया जाए जिसमें सभी जरूरी मजामीन शामिल हों। दाखिला टेस्ट पास करने वाले मदारिस के 10+2 वाले तलबा को डिग्री सतह की कार्सेज में दाखिला के लायक तसलीम कर लिया जाए।	

2.3 **एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल के मुअज़्ज़ज़ मेम्बरान (मा0 सदस्यों) के ज़रिये दिये गये मशवरों पर की गई कार्रवाई–**

- **मा0 सदस्यों के जरिये 19 अगस्त 2012 में दिये गये मशवरों व तजवीज़ों पर यूनिवर्सिटी के जरिये की गई कार्रवाई से मा0 सदस्यों को दर्जाज़ेल तफसील के मुताबिक़ बाख़बर किया गया।**

(1) डा0 चन्द्र विजय चतुर्वेदी के ज़रिये दिये गये मशवरे और उन पर की गई कार्रवाई निम्न हैं–

मशवरह	कार्रवाई
गैर भाषाई मज़ामीन को भी पढ़ाया जाना चाहिये।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–5 में शामिल कर लिया गया है।
हिन्दुस्तान की सक़ाफ़तों (संस्कृति) और भाषाओं का मरकज़ कायम किया जाना चाहिये।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–5 में शामिल कर लिया गया है।
उ0प्र0 के अक़लियतों को मेन स्ट्रीम में लाने की ज़रूरत है।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–3 में शामिल कर लिया गया है।
धर्म और राजनीति के बहुत से मरकज़ हैं लेकिन ज़बानों का नहीं।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–1 में शामिल कर लिया गया है।
मैनेजमेन्ट के 5 साल के कोर्स के बजाये कोई दूसरा कोर्स करने के बाद मैनेजमेन्ट का 2 साल का कोर्स रखें।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–1 में शामिल कर लिया गया है।
लॉ का 5 साल का कोर्स ठीक है।	कानून फैकल्टी के लिये ओहदे मन्जूर होने के बाद कार्रवाई हो सकेगी।
एक साल ज़बान और अदब भी पढ़ना पड़ेगा।	हर कोर्स के साथ उर्दू, अरबी या फारसी की तालीम दी जायेगी।
इन्टरप्रेटर सियाहत (पर्यटन) का बहुत अच्छा बिज़नेस है।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–1 में शामिल कर लिया गया है।
यूनिवर्सिटी के साथ मदरसों का इल्हाक़ करना सही क़दम है	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–2 में शामिल कर लिया गया है।
इल्हाक़ के लिये क़ायमशुदा अक़लियती इदारों के लिये एक तारीख़ मुक़र्रर कर लें।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–2 में शामिल कर लिया गया है।
नये इल्हाक़ के दायरे को बढ़ा कर हिन्दुस्तान कर दें।	मौजूदा एक्ट में सिर्फ उ0प्र0 तक दायरा कार महदूद है।
जो अक़ल्लियती इदारे पहले से क़ायम हो चुके हैं उनके इल्हाक़ पर फौरन तवज्जो दी जाये।	हुकूमत की नोटिफिकेशन जारी होने के बाद गौर किया जायेगा।
नये डिग्री कालेजों के इल्हाक़ के लिये ज़मानत की रक़म, ज़मीन और बिल्डिंग के मेयार	स्टेटस में शामिल किया गया है।

कुलसचिव
ख्वाजा ...
उर्दू, अरबी, फारसी ...

(मापदंड) को कम किया जाये।	
हुकूमते हिन्द ने अकलियती इदारों के लिये माली इमदाद का पैकेज मन्ज़ूर किया है, उस से मदद ली जाये।	कार्रवाई की जायेगी।
अगर कोई हमारे कोर्स को अख्तियार करता है तो उस की तजदीदकारी (आधुनिकीकरण) करना चाहिये।	कार्रवाई की जायेगी।
स्कूलों और मदरसों को माडर्नाइज़ करने की ज़रूरत है। उनको मदद और पैकेज देने की ज़रूरत है।	हुकूमत से उ0प्र0 यूनिवर्सिटी एक्ट 1973 की दफ़ा–7 (ख) के तहत नोटिफ़िकेशन जारी होने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।
मदरसों के तालिब इल्मों के लिये ब्रिज कोर्स चलाया जाना चाहिये।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–14 में शामिल कर लिया गया है।
सभी तालिब इल्मों के लिए उर्दू, अरबी या फ़ारसी का कोर्स पढ़ना लाज़मी रखा जाय।	इस पर अमल किया जायेगा।
बी0काम0 के साथ बी0बी0ए0 भी चलायें। बी0सी0ए0 को अगले मरहले (चरण) में लें। बी0बी0ए0 भी जाड़ लें।	बी0काम0 और बी0सी0ए0 कोर्स की इजाज़त हुकूमत से मिल गई है।
इलाहाबाद में अरबी, फ़ारसी के मख्तूतात (पाण्डुलिपियां) हैं। कई सौ साल पुरानी तस्वीरों की मख्तूतात हैं उनकी हिफाज़त करना ज़रूरी है। उनका तर्जुमा भी हिन्दी और अंग्रेज़ी में होना चाहिये।	प्रोजेक्ट की मन्ज़ूरी के बाद कार्रवाई की जायेगी।
सर्वे करवा कर फ़ारसी के मख्तूतात का तरजुमा करा लें। उसका मरकज़ (केन्द्र) बनायें जैसे रज़ा लाइब्रेरी, पब्लिक लाइब्रेरी वग़ैरा हैं।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–7 में शामिल कर लिया गया है।
आईडियालॉजी क़ाबिले तारीफ़ है जो अहले इल्म (शिक्षाविदों) को जमा करके बनाई गई है।	नोट किया गया।

(2) प्रो0 मोहम्मद मियां के ज़रिये दिये गये मशवरे और उन पर की गई कार्रवाई निम्न हैं–

मशवरह	कार्रवाई
क़ौमी सतह पर मदरसों का इल्हाक़ मुमकिन नहीं। इस सिलसिले में यूनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन से जानकारी हासिल कर ली जाये।	हुकूमत से उ0प्र0 यूनिवर्सिटी एक्ट 1973 की दफ़ा–7 (ख) के तहत नाटिफ़िकेशन जारी होने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।
दाखिलों के लिये उर्दू, अरबी, फ़ारसी ज़बान की जानकारी लाज़मी तौर पर रखने की शर्त पर फिर से गौर करने की ज़रूरत है।	दाख़िले के वक्त उर्दू, अरबी या फ़ारसी का अमली जानकारी रखने वाले तलबा व तालिबात को तरजीह दी जाऐगी।
जामिया मिल्लिया इस्लामिया का 6 माह का फासलाती (पत्राचार) कोर्स चल रहा है। उस का तसलसुल (निरंतर) क़ायम करने पर ग़ौर कर लिया जाये।	फ़ासलाती कोर्स शुरू करते वक्तत इस पर गौर किया जायेगा।
पेशावराना कोर्स को तरजीह देना सही है लेकिन 5 साल का कोर्स फौरन शुरू न करें।	नोट किया गया।
3 और 2 साल के कोर्स चलाना चाहिये जो अलग अलग हों।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–1 में शामिल कर लिया गया है।
अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी की तर्ज पर मसावी	अमल किया जायेगा।

कुलसचिव
ख्वाजा ... उर्दू, अरबी, फारसी विश्वविद्यालय, लखनऊ

कमेटी (Equivalence Committee) बना ली जाये जो तय करे कि कौन से मदरसों के कोर्स यूनिवर्सिटी के ज़रिये तसलीम (मान्य) किये जायें।	
दूसरी यूनिवर्सिटीज़ जिन में ओपन यूनिवर्सिटी भी शामिल हैं की मानिन्द इश्तराक़ (सहयोग) कायम करने के लिये टास्क फोर्स कायम की जाये।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–11 में शामिल कर लिया गया है।
इदारा (संस्था) जब बनता है तो बहुत एहतियात से आगे बढ़ना चाहिये। बहुत तेज़ी से बढ़ने में आगे कोआर्डिनेशन मुश्किल होता है। इससे आइन्दा वाइस चांसलर के लिये मुश्किल होती है।	मुअज़्ज़िज़ मेम्बर की क़ीमती राय नोट की गई है।
पहले स्ट्रक्चर सोच लें। स्कूल, डिपार्टमेनट, सेन्टर का स्ट्रक्चर क़ायम करना वग़ैरह।	यूनिवर्सिटी का स्टेट्यूट (Statute) हुकूमत में मंजूरी के लिए ज़ेरे ग़ौरा है।
उ0प्र0 में उर्दू पढ़ने वालों की तादाद कम होती जा रही है। इस यूनिवर्सिटी से वलवला (जोश) पैदा होगा।	नोट किया गया।
फासलाती कोर्स शुरू जरूर करें। अभी महदूद हद तक करें। स्टडी सेन्टर बनाना पड़ेगा जिसको एडमिनिस्टर करना मुश्किल है वरना क्वालिटी घट जायेगी।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–11 में शामिल कर लिया गया है।
ब्रिज कोर्स खुद करायें, आउट सोर्स न करायें।	नोट किया गया।
मदारिस की डिग्रियां एक साल के अंग्रेज़ी ब्रिज कोर्स के बाद मदरसों के कोर्स को मसावी कर सकते हैं।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–14 में शामिल कर लिया गया है।
मदारिस से आगे निकलने का मौक़ा देना चाहिए।	नोट किया गया।
डायरेक्ट्रेट ऑफ डिस्टेन्स एजुकेशन बनायें।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–11 में शामिल कर लिया गया है।

(3) बद्री नारायण के ज़रिये दिये गये मशवरे और उन पर की गई कार्रवाई निम्न हैं––

मशवरह	कार्रवाई
ये यूनिवर्सिटी एक प्रतीक है हिन्दुस्तानियत का।	नोट किया गया।
रिसर्च और कम्परेटिव हिन्दुस्तानी लिट्रेचर पर काम हो। हिन्दुस्तानियत को समझा जाये। हिन्दुस्तानी तहज़ीब का मरकज़ क़ायम किया जाए।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–5 में शामिल कर लिया गया है।
वोकेशनल की फ़िक्र सही है लेकिन बड़ा सोचें।	नोट किया गया ।
डिजिटल लैब सिर्फ प्रिज़र्वेशन मोड में न हो। आर्काइव, रिसर्च, गैलरी हो। बसरी रिश्ता (Visual Linkage) जरूरी है।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–7 में शामिल कर लिया गया है।
यूनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन से तबक़ों की शुमूलियत (समावेश) का मुताला (अध्ययन) करने पर ग्रान्ट मिल सकती है।	तालीमी–साल शुरू होने के बाद इस नुक्ता पर कार्रवाई की जाएगी।
ग़ैर लिसानी या ग़ैर भाषाई हाशिये पर पड़े तबक़ात का मुताला भी शामिल किया जाये।	मुअज़्ज़िज़ मेम्बर की क़ीमती राय नोट की गई है। जिस पर मुस्तक़बिल में मुमकिन कार्रवाई की जाएगी।
उर्दू, अरबी, फ़ारसी की तालीम दाखिले के वक्त	दूसरी मीटिंग में फैसला लिया गया कि दाखले के

कुलसचिव
ख्वाजा ...
उर्दू, अरबी, फारसी ...

लाज़मी न क़रार दी जाए ताकि गैर उर्दूदां तबका भी दाखिला पा सके।	वक्त तलबा/तालिबात के लिये उर्दू, अरबी या फारसी की अमली जानकारी तरजीही लियाकत होगी जिसके लिये टेस्ट लिया जायेगा।
मग़रिबी मुमालिक (पश्चिमी देशों) की यूनिवर्सिटी से भी इश्तराक़ क़ायम किया जाये।	मुस्तक़बिल में मुमकिन कोशिश जाएगी।
यू0जी0सी0, तसव्वुरात (परिकल्पना) और तकनीक पर मौज़ुआती (विषयगत) वर्कशाप कराई जाये।	मुस्तक़बिल में मुमकिन कोशिश जाएगी।
मारजिनेलिटी को ख़त्म करने की कोशिश कर रहे हैं। जो ज़बानें मारजिन पर हैं उन्हें सपोर्ट करें।	नोट किया गया।
नोमैडिक्स (ख़ानाबदोश) को भी जोड़ सकते हैं।	नोट किया गया।
पब्लिकेशन भी हो।	नोट किया गया।
सियाहत (भाषा ज्ञान) से ज़रूर जोड़ें, कोर्स बनाया जाये।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–5 में शामिल कर लिया गया है।
दूसरी जगह के लिए भी भाषा कोर्स बनाया जाए।	नोट किया गया।
लिसानियात एक बड़े कार्पोरेट की शक्ल ले रहा है। मिडिल ईस्ट और जहां उर्दू, अरबी, फ़ारसी पर काम हो रहा है उससे जुड़े।	मुअज़्ज़िज़ मेम्बर की क़ीमती राय नोट की गई है। जिस पर मुस्तक़बिल में मुमकिन कार्रवाई की जाएगी।
वर्कशाप हो।	नोट किया गया।

(4) प्रो0 नसीर अहमद खां के ज़रिये दिये गये मशवरे और उन पर की गई कार्रवाई निम्न हैं–

मशवरह	कार्रवाई
अदब की ज़रूरत नहीं है। इसके लिये बहुत सी यूनिवर्सिटी हैं। ज़बान पर तवज्जुह देने की ज़रूरत है।	नोट किया गया।
हिन्दुस्तानी अदब पर तक़ाबुली मुताला (तुलनात्मक अध्ययन) का मरकज़ क़ायम करने की तजवीज़ मुनासिब है।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–5 में शामिल कर लिया गया है।
बी0सी0ए0, बी0काम0, ट्रांसलेटर, इन्टरप्रेटर उर्दू में भी हो।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–1 में शामिल कर लिया गया है।
इन्दिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी से इश्तराक़ ज़रूर क़ायम किया जाये। उनके पास 335 पेशावराना कोर्सेज़ चल रहे हैं उनमें से 50 कोर्स तरजीही तौर पर लिये जायें।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–11 में शामिल कर लिया गया है।
तहक़ीक़ पर मबनी (शोध आधारित) ज़बान की तरक़्क़ी का कोर्स ज़रूर शामिल किया जाये।	मुअज़्ज़िज़ मेम्बर की क़ीमती राय नोट की गई है। जिस पर मुस्तक़बिल में मुमकिन कार्रवाई की जाएगी।
उर्दू को इस क़ाबिल बनाया जाये जो तमाम चीज़े झेल सके।	हुकूमत ने यूनिवर्सिटी में अलग से शोबा उर्दू क़ायम करने की मंज़ूरी दी है।
एडवांस उर्दू रिसर्च इन्स्टीट्यूट क़ायम करना चाहिये।	उर्दू, अरबी और फारसी में रिसर्च इंस्टीट्यूट के क़याम की तजवीज़ मन्ज़ूर की गई।
संस्कृत के बिलमुक़ाबिल उर्दू करोड़ों लोग बोलते हैं। उर्दू जिन्दा है।	नोट किया गया।
क़लील मुद्दती (अल्पकालीन) कोर्सेज़ शुरू किए जाएं।	पढ़ाई शुरू होने पर इस मशवरे पर अमल किया जाएगा।

कुलसचिव
ख्वाजा ...
उर्दू, अरबी, फारसी ...

ज़बान की तरक्की के लिए रिसर्च की सतह पर कोर्स शुरू किए जाएं।	अगले चरण में इस पर कार्रवाई की जायेगी।
पेशावराना कोर्सेज़ चलाए जाएं।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–3 में शामिल कर लिया गया है।
मदारिस के तलबा बेहद ज़हीन हैं। मदरसों पर फ़ोकस करना चाहिए।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–2 में शामिल कर लिया गया है।
मदरसे के तालिबइल्मों के लिए उर्दू कोर्स (6 माह का) भी शुरू किया जा सकता है। साढ़े चार साल में मदरसे के तालिबइल्म डिग्री हासिल कर सकते हैं।	पढ़ाई शुरू होने पर इस मशवरे पर अमल किया जाएगा।
खत्ताती (कैलीग्राफ़ी) का फन ख़त्म हो रहा है। तुग़रा नवीसी का फ़न ख़त्म है। वो हमारा सक़ाफ़ती सरमाया है। गोल्डेन ट्रेज़र को ज़ाया न होने दें। इसके लिए एक कोर्स करें जिससे ये फ़न ज़िन्दा रह सकें।	इस कोर्स को शुरू करने के लिए हुकूमत से गुज़ारिश की जाएगी।
लाखों किताबें पड़ी हैं जिनमें दीमक लग रही है। यूनेस्को से माली इमदाद ली जा सकती है।	मुअज़्ज़िज़ मेम्बर की क़ीमती राय नोट की गई है। यूनिवर्सिटी स्टाफ की भर्ती होने पर इस मशवरे पर अमल किया जाएगा।
सोशल कल्चरल इन्स्टीट्यूशन जैसे मुशायरा, दास्तानगोई वग़ैरा को बचाने की ज़रूरत है। इनके ज़रिए उर्दू का फ़रोग़ हुआ है।	नोट किया गया।
उर्दू रस्मे ख़त सिख़ने की ज़रूरत है।	नोट किया गया।

(5) निहाल रिज़वी के ज़रिये दिये गये मशवरे और उन पर की गई कार्रवाई निम्न हैं–

मशवरह	कार्रवाई
यहां के तालिब इल्म बाहर जाकर रोज़गार से जुड़ें।	नोट किया गया।
लैब में स्टडी करना अलग है, मौके पर जाकर स्टडी करना अलग है।	नोट किया गया।
उर्दू, अरबी, फ़ारसी के एक एक माहिर ईरान, जामिया अज़हर, जामिया मदीना मुनव्वरा जाकर मौक़े पर देखें।	नोट किया गया।

6) प्रो0 अब्दुल वदूद अज़हर के ज़रिये दिये गये मशवरे और उन पर की गई कार्रवाई निम्न हैं–

मशवरह	कार्रवाई
ज़बानों के मुताला के लिए जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी एक माडल है।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–5 में शामिल कर लिया गया है।
स्पेनिश को ज़रूर रखें। इसका बहुत बड़ा मार्केट है। चीनी, जापानी भी शामिल की जाए।	नोट किया गया।
प्रोफेसर और लेक्चरर की पोस्ट भरिए। एकदम से सारी पोस्ट न भरें। अगर प्रोफेसर न मिलें तो रीडर रखिए।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–1 में शामिल कर लिया गया है।
फ़ारसी सबसे ज़्यादा सेक्यूलर ज़बान है। हिन्दुस्तान का जितना भी तआरूफ़ फ़ारसी से हुआ वो किसी और ज़बान से नहीं हुआ। कोई	नोट किया गया।

कुलसचिव
ख्वाजा मु... चिश्ती
उर्दू, अरबी, फारसी विश्वविद्यालय, लखनऊ

हिन्दू ग्रन्थ ऐसा नहीं है जिसका तरजुमा फारसी मे नहीं है।	
मदरसे के तालिब इल्मो जबान की महारत के लिए चुना जा सकता है।	नोट किया गया।
माडर्न लैग्वेज की पढ़ाई कम से कम 5 साल करने के बाद दीनियात वगैरा पढ़ाए।	एकेडमिक काउन्सिल फैसला कर सकेगी।
लैग्वेज लैब बनाये। जबान का तलफ्फुज बहुत अहम है।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–5 मे शामिल कर लिया गया है।
एक या दो साल का इन्टरपेटर का कोर्स जरूर हो।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–1 में शामिल कर लिया गया है।
इन्दिरा गांधी आर्ट एण्ड कल्चर सेन्टर में मिशन फार प्रिजर्वेशन आफ परशियन लैग्वेज है।	नोट किया गया।
ईरानी एम्बेसी के मरकज़ नूर में 25000 मख्तूतात जो हिन्दुस्तान में मौजूद हैं उनकी माइक्रोफिल्म बनाई गई है।	MoU के लिए मरकज़ी हुकूमत से गुजारिश की गई है।
हर्बल मेडिसिन पूरी दुनिया में मंजूरशुदा है। तिब्बे यूनानी कोर्स (5 साल या कम) बहुत ज़रूरी है।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–1 में शामिल कर लिया गया है।
तकाबुली मुताला के लिए फ़ारसी की अहमियत है। वाहिद ज़बान है जिसने सबसे लिए है। तरजुमे की बहुत पुरानी रवायत है।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–5 में शामिल कर लिया गया है।
वस्त (मध्य) एशियाई मुमालिक भी फ़ारसी का इस्तेमाल करते हैं।	नोट किया गया।
ईरान हर तरह मदद करेगा। असातिज़ा (शिक्षक), किताबें, वज़ीफ़े वग़ैरा भी मुहैय्या कराएगा।	अमल किया जायेगा।
मदरसे के लिए सेल बनाया जाए। हर मदरसे के बारे में जानकारी ली जाए और मदद की जाए।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–2 में शामिल कर लिया गया है।
तक़ाबुली अदब ज़रूरी है।	अमल किया जायेगा।

7) डा0 मो0 रफ़ीक़ के ज़रिये दिये गये मशवरे और उन पर की गई कार्रवाई निम्न हैं–

मशवरह	कार्रवाई
यूनिवर्सिटी का लोगो हो।	अमल किया जायेगा।
मुरासलात (पत्राचार) उर्दू में नहीं थे उनको उर्दू में होना चाहिए।	नोट किया गया।
मदरसों को मेन स्ट्रीम में लायें।	नोट किया गया।
पेशावराना कोर्सेज़ को तरजीह दें।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–3 में शामिल कर लिया गया है।
बहुत जल्दबाजी की जरूरत नहीं है। शुरूआत में कम कोर्स शुरू करें।	मुअज्ज़ज़ मेम्बर की कीमती राय नोट की गई।
शुरू में सहाफत, तरजुमा वगै़रा रखें।	मुअज्ज़ज़ मेम्बर की कीमती राय नोट की गई।
डिजिटल लाइब्रेरी, मख्तूतात वग़ैरा का प्रोजेक्ट अच्छा है।	नोट किया गया।

8) प्रो0 शब्बीर अहमद के ज़रिये दिये गये मशवरे और उन पर की गई कार्रवाई निम्न हैं–

मशवरह	कार्रवाई
सियाहत को जोड़ा जाये जो मैनेजमेन्ट से जुड़ा है।	अगले मरहले में इस डिपार्टमेन्ट की तशकील की कोशिश की जायेगी।

रजिस्ट्रार
उर्दू, अरबी, फारसी विश्वविद्यालय

डिजिटल लाईब्रेरी के साथ बी0एल0आई0एस0सी0, एम0एल0आई0एस0सी0 को कोर्स में जोड़ा जाये।	इस पर कार्रवाई की जायेगी।
साथ में एक पर्चा अरबी फ़ारसी का रखा जाये।	एजेण्डा प्वाइंट 2.10 में शामिल किया गया है।
यूनिवर्सिटी कोर्सेस के साथ साथ बी0एड0 कोर्स चलाने को मद्दे नज़र रखा जाये।	दूसरी मीटिंग में तजवीज मन्जूर की गई।
अरबी, फ़ारसी की तदरीस (शिक्षण) की ट्रेनिंग ज़रूरी है।	नोट किया गया।
कालेज और बी0ए0 की सतह पर फ़ारसी, अरबी के अच्छे तालिब इल्म नहीं मिलते। यूनिवर्सिटी की सतह पर मिल सकते हैं।	नोट किया गया।
मदरसा बोर्ड की तालीम को पुरकशिश (आकर्षक) बनाने के लिए बी0एड0 शुरू किया जाए।	इसकी पढ़ाई शुरू होने जा रही है।
अरबी, फ़ारसी के डिपलोमा, सर्टिफ़िकेट कोर्स चलाये जायें, जामिया मिल्लिया इस्लामिया की तर्ज पर।	भर्ती होने के बाद इस मशवरे पर गौर किया जाएगा।
अरब कल्चर में बी0ए0, एम0ए0 हो।	नोट किया गया।
मैनेजमेन्ट और कामर्स के साथ एक साल का अरबी बोलचाल का डिपलोमा हो।	नोट किया गया।

9) अनवर जलालपुरी के ज़रिये दिये गये मशवरे और उन पर की गई कार्रवाई निम्न हैं–

मशवरह	कार्रवाई
25–30 मुमालिक अरबी बोलने वाले हैं तो ऐसे अफ़राद तैयार करें जो अरबी, अंग्रेजी बोल सकें।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–1 में शामिल कर लिया गया है।
मदरसे के तालिब इल्म के विज़न में फैलाव नहीं होता। बी0ए0 में मदरसे के तालिब इल्म को दाख़िला मिलना चाहिए।	नोट किया गया।
सम्पूर्णनन्द यूनिवसिटी, गुरूकुल कांगड़ी, महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी के निसाब (पाठ्यक्रम) को देख लिया जाए।	नोट किया गया।
कम से कम तिब्बिया कालेज का इन्तिज़ाम हो।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–1 में शामिल कर लिया गया है।

10) डा0 मेराज अहमद के ज़रिये दिये गये मशवरे और उन पर की गई कार्रवाई निम्न हैं–

मशवरह	कार्रवाई
अक़लियती इन्टर कालेज को प्रोमोट करना चाहिए।	नोट किया गया।
अक़लियत की तालीम का दायरा वसी किया जाए जिस के लिए यूनिवर्सिटी ऐसे इंस्टीट्यूट को तलाश करें और उनसे कहें कि आला तालीम के लिए प्रमोट किया जाए।	मुअज़्ज़िज़ मेम्बर की क़ीमती राय नोट की गई है। हुकूमत के नाटिफ़िकेशन जारी होने के बाद इस मशवरह पर अमल किया जाएगा।
अक़लियती इदारों का इल्हाक किया जाए।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–2 में शामिल कर लिया गया है।
जिन कालेजों में ग्रेजुएट कोर्स चल रहे हैं उनको आगे क्या करना है इस पर रहबरी की जाए।	पढ़ाई शुरू होने पर इस मशवरे पर अमल किया जाएगा।

कुलसचिव
ख्वाजा मु... ...चिश्ती
उर्दू, अरबी, फारसी विश्वविद्यालय, लखनऊ

तलबा को बी0ए0, बी0सी0ए0, बी0काम0 की जरूरत है।	इन कोर्सेज की पढ़ाई जल्दी शुरू होगी।
देही इलाकों में मुरासलाती कोर्स को साथ लेकर चलना चाहिए।	मुअज्जिज मेम्बर की कीमती राय नोट की गई है।
तकाबुली मुताला आज की जरूरत है। इसका कान्सेप्ट बहुत अच्छा है। कोर्सेज़ अपने तैयार करें।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–5 में शामिल कर लिया गया है।
अगले साल से यूनिवर्सिटी का सेशन ज़रूर शुरू किया जाए।	इस साल नवम्बर से कोशिश की जायेगी।

11) डा0 मज़हर हुसैन के ज़रिये दिये गये मशवरे और उन पर की गई कार्रवाई निम्न हैं–

मशवरह	कार्रवाई
कोर्सेज़ क़लील मुद्दती हों।	नोट किया गया।
ब्रिज कोर्स जल्द शुरू करना चाहें ताकि मदरसा या अनरिकगनाईज़्ड जगह से पढ़ने वालों को फायदा मिल सके।	एजेण्डा प्वाइंट 2.2 के पैरा–14 में शामिल कर लिया गया है।
लैंग्वेज कोर्सज़ में ऐसे कोर्स भी डिज़ाइन किए जाएं जो ग़ैर उर्दूदां के लिए हो।	नोट किया गया।
टेक्निकल कोर्सेज़ के बारे में तय करना है कि अभी करना है या बाद में।	नोट किया गया।
बी0एड0 कोर्स भी ज़रूरी है।	शामिल किया गया है।

12) प्रो0 सै0 ज़हीर हुसैन जाफ़री के ज़रिए दिये गये मशवरे और उन पर की गई कार्रवाई निम्न हैं–

मशवरह	कार्रवाई
एक 5 साल का इन्टीग्रेटेड कोर्स ऐसा हो जो बर्रे सग़ीर हिन्द के स्कालरों के ज़रिए (अरबी में) मज़हब, क़ानून, अदब और एथिक्स (एख्लाक़ियात) पर किए गए काम पर मरकूज़ हो।	नोट किया गया।

2.4 **मालियाती कमेटी (वित्त समिति) की मुख्तलिफ़ मीटिंग में लिए गए फ़ैसलों की मंजूरी–**

यूनिवर्सिटी की मालियाती कमेटी की पहली और दूसरी मीटिंग बिलतरतीब 18 मार्च 2011 और 19 अप्रैल 2012 को हुई।

❖ **मालियाती कमेटी के ज़रिये लिये गये फैसलों की एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल ने मन्जूरी दी।**

2.5 **बजट 2011–12 और 2012–13 की मंजूरी–**

मालियाती साल 2011–12 का बजट मालियाती कमेटी की पहली मीटिंग जो तारीख़ 18 मार्च 2011 में मंजूर हुआ था। 2011–12 का रिवाइज़्ड (तरमीमी) बजट व 2012–13 का तख़मीना बजट तारीख़ 19 अप्रैल 2012 को दूसरी मीटिंग में मंजूर हुआ। इसके साथ ही 31 मार्च 2011 को मालियाती कमेटी की इमर्जेन्सी मीटिंग (Meeting by circulation) हुई जिसमें यूनिवर्सिटी के क़ाबिल इस्तेमाल ज़मीन की तबदीली के लिए रू0 77.826 लाख लखनऊ डेवलेपमेन्ट अथॉरिटी में जमा कराने के लिए मालियाती कमेटी की मंजूरी हासिल की गई थी।

❖ **उक्त दो सालों के बजट की एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल ने मन्जूरी दी।**

2.6 उ0प्र0 हुकूमत के ज़रिये यू0पी0 की सभी यूनिवर्सिटियों के लिए यकसां तयशुदा निसाबे तालीम (पाठ्यक्रमों) को लागू किए जाने के मुताल्लिक़ मंजूरी–

❖ एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल ने अपनी दूसरी मीटिंग तारीख 21 सितम्बर में यह फैसला किया कि जहां तक मुमकिन होगा यह यूनिवर्सिटी भी यूपी0 हुकूमत के ज़रिये लिए गए फ़ैसले के मुनासिबत से यू0पी0 की तमाम यूनिवर्सिटियों की तरह एकसा निसाबे तालीम नाफ़िज़ करेगी लेकिन अगर यूनिवर्सिटी निसाबे तालीम में किसी तरमीम की जरूरत महसूस करती है तो एकेडमिक काउन्सिल से पास कराने के बाद तरमीमशुदा निसाब नाफिज़ करने की अहल होगी।

2.7 तालीमी साल 2012–13 शुरू किए जाने के मुताल्लिक़ मंजूरी–

पहले तालीमी साल शुरू करने के लिए हुकूमत के ज़रिए 74 असातिज़ह की असामियां मंजूर हो चुकी हैं जिसका इश्तिहार तारीख़ 07 सितम्बर 2012 (राष्ट्रीय सहारा उर्दू, आग उर्दू, दैनिक जागरण (हिन्दी) और टाइम्स ऑफ इण्डिया (अंग्रेजी) में), में शाये हो चुका है। असातिज़ह की तकर्ररूरी की कार्रवाई भी तज़ी से किए जाने की तजवीज़ है। यू0जी0सी0, नई दिल्ली, के ज़रिये तयशुदा क़वानीन व ज़वाबित के मुताबिक़ तालीमी साल 2012–13 शुरू किए जाने की तजवीज़ है। तजावीज़ मुअज़्ज़िज़ मेम्बरान के सामने बराए मंजूरी पेश हैं। मुन्दरजाबाला असातिज़ह की तादाद को नज़र में रखते हुए तक़रीबन 1100 (एक उस्ताद पर 30 तलबा/तालिबात) तलबा/तालिबात को दाख़िला दिए जाने की तजवीज़ है।

हुकूमते यू0पी0 के हुक्म नामे के तहत तालीमी साल 2012–2013 में नवम्बर 2012 तक असातिज़ा के 50 फीसद ओहदे भरे जाने की उम्मीद है। भरती के बाद उर्दू, अरबी और फारसी के अलावा हिन्दी, इंगलिश, होम साइंस, भुगोल, सियासियात, मआशियात, तारीख और फ़िज़िकल एजुकेशन में 3 वर्षीय बी0ए0 कोर्स की पढ़ाई शुरू की जायेगी। इसके अलावा बी0काम0, एम0बी0ए0, मास कम्युनिकेशन व जर्नलिज़्म, कम्प्यूटर एप्लिकेशन के डिग्री कोर्सेस और एम0बी0ए0 की पढ़ाई भी शुरू की जायेगी।

❖ **एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल ने मुन्दर्जाबाला तजवीज़ें मन्जूर कीं और तालीमी साल 2012–13 सेमेस्टर सिस्टम के तहत शुरू करने की मन्जूरी दी।**

2.8 **यूनिवर्सिटी एक्ट 1973 के मुताबिक़ सदरे शोअबा को मैम्बर की हैसियत से नामज़द किया जाना–**

यूनिवर्सिटी एक्ट 1973 के सेक्शन 31 (4) (a) (II) के मुताबिक मुतअल्लिक़ शोअबा का सदरे शोअबा सेलेक्शन कमेटी का मेम्बर होता है। इस यूनिवर्सिटी में अभी क्योंकि किसी उस्ताद की तकर्रूरी नहीं हुई है इसलिए कोई सदरे शोअबा भी नहीं है। इसलिए लखनऊ यूनिवर्सिटी, लखनऊ, या रियासती/मरकज़ी यूनिवर्सिटी के मज़मून से मुतअल्लिक़ सदरे शोअबा (रिटायर्ड वग़ैरह) को नामज़द किया जाये।

❖ **एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल ने रियासती या मरकज़ी यूनिवर्सिटी के मज़मून से मुतअल्लिक़ सदरे शोबा या रिटायर्ड सदरे शोबा को मेम्बर की हैसियत से नामज़द किये जाने की मन्जूरी दी।**

53

2.9 एम0बी0ए0 में दाख़िला के लिए कैट में स्कोर के बुनियाद पर दाख़िला करना–

हुकूमत के ज़रिये एम0बी0ए0 में निसाबे तालीम मंजूर किया गया है। एम0बी0ए0 को IIM के मेयार के बराबर बनाए जाने की तजवीज़ है कि उस निसाबे तालीम में दाख़िला ''कैट'' में हासिलशुदा नम्बरों की बुनियाद पर किया जाए, साथ ही उर्दू, अरबी व फ़ारसी ज़बान (भाषा) को फ़रोग़ देने के लिये इन ज़बानों की अमली जानकारी रखना भी ज़रूरी हो। इस यूनिवर्सिटी के क़याम का अहम मक़सद ये है कि उर्दू, अरबी और फ़ारसी ज़बानों और उसकी तहज़ीब को बढ़ावा दिया जाये। कोर्स ऑफ स्टडीज़ को मुनतख़ब करते वक़्त ये मक़सद मरकज़ी नुक्ता की हैसियत से रखा गया है कि ऐसे कोर्सेज़ की पढ़ाई की जाये जिनके ज़रिये तलबा व तालिबात को आसानी से रोज़गार मिल सके। इसके लिए निसाब तैयार करते वक्त इन दोनो मक़ासिद को मद्दे नज़र रखना बेहतर होगा कि मुनतख़ब किये गये कोर्स रोज़गार पर मब्नी हों और उनके तालीम के लिये मुनतख़ब किये गये तलबा व तलिबात और असातिज़ह और स्टाफ उर्दू, अरबी या फ़ारसी और कम्प्यूटर की अमली जानकारी रखते हों, इसलिए तजवीज़ है कि तलबा व तलिबात का दाख़िला करते वक़्त उर्दू, अरबी या फ़ारसी के अमली जानकारी का टेस्ट लिया जाये, कोर्स ऑफ स्टडीज़ में उर्दू, अरबी या फ़ारसी को लाज़मी मज़ामीन की हैसियत से पढ़ाना शामिल किया जाये और उन ज़बानों में अमली जानकारी रखने वालों को तरजीह दी जाये। इन ज़बानों को लाज़मी मज़ामीन की शक्ल में शामिल करके हासिल किए गए नम्बरों को मार्कशीट में दूसरे मज़ामीन की तरह शामिल किया जाये, इसके लिए दाख़िले के वक़्त उनमें से किसी एक ज़बान का टेस्ट लेना और दौराने तालीम दो/तीन सालों की मुद्दत में उर्दू, अरबी या फ़ारसी में से किसी एक ज़बान में इम्तिहान पास करने को लाज़िम करार दिया जाये।

- **एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल ने मुन्दर्जाबाला शरायत को मन्ज़ूर करते हुये यह फैसला किया कि यूनिवर्सिटी एम0बी0ए0 में दाखला के लिये CAT के बजाये खुद टेस्ट करायेगी।**

2.10 डिग्री सतह की पढ़ाई के वक़्त उर्दू, अरबी या फ़ारसी में से किसी एक ज़बान को पढ़ाना, लाज़मी करने की तजवीज़–

दर्जबाला के मुताबिक़ उर्दू, अरबी या फ़ारसी ज़बान को बढ़ावा देने के लिए डिग्री सतह की पढ़ाई में भी तयशुदा निसाब के अलावा मुन्दरजाबाला ज़बानों में से किसी एक ज़बान को अलग से लाज़मी करार दिया जाये।

- **एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल ने मुन्दर्जाबाला तजवीज़ मन्ज़ूर की।**

2.11 तदरीसी व ग़ैर तदरीसी अमले में उर्दू, अरबी या फ़ारसी और कम्प्यूटर की जानकारी रखने वाले उम्मीदवारों को तरजीह देना–

उर्दू, अरबी और फ़ारसी ज़बान को बढ़ावा देने के लिए असातिज़ह और दूसरे स्टाफ के इन्तिख़ाब में उर्दू, अरबी या फ़ारसी और कम्प्यूटर का इल्म रखने वाले उम्मीदवारों को तरजीह देने की तजवीज़ मंज़ूरी के लिए मुअज़्ज़िज़ मेमबरान के सामने पेश है, चुंकि ये यूनिवर्सिटी उर्दू, अरबी और फ़ारसी की तहज़ीब को बढ़ावा देने के लिये क़ायम की गई है और साथ में रोज़गार के कोर्सेज़ को अव्वलियत देना भी ज़रूरी है, इसलिए तजवीज़ है कि तालीम और इम्तिहान के वसीले अंग्रेज़ी में हों लेकिन जो तलबा या तालिबात किसी मज़मून को उर्दू में पढ़ना चाहें या बज़रिया उर्दू इम्तिहान देना चाहें उसका भी माकूल इन्तेज़ाम किया जाये।

❖ एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल ने मुन्दर्जाबाला तजवीज़ मन्जूर की।

➢ एक मेम्बर ने यह मशवरह भी दिया कि तदरीसी असामियों के लिये जो इश्तिहार अखबारों और वेबसाइट पर दिया गया है उसमें मुन्दर्जाबाला फैसले के मुताबिक़ उर्दू, अरबी या फारसी और कम्प्यूटर की अमली जानकारी रखने वालों को तरजीह देने की बात शामिल करने की गरज़ से तसहीह जारी करने पर गौर किया जायेगा।

2.12 यूनिवर्सिटी के तामीराती कामों की तरक़्क़ी के मुताल्लिक़ तफ़सीलात देना–

मुख़्तलिफ़ माली सालों में यू0पी0 हुकूमत के ज़रिये अब तक तामीरी कामों के लिए रू0 174.25 करोड़ मंजुर किए जा चुके हैं और उसकी अदायगी काम करने वाले इदारा उ0प्र0 राजकीय निर्माण निगम को किया जा चुका है। इस रक़म से मुन्दरजा ज़ेल तामीरी काम कराए जा रहे हैं–

क्र0	मद का नाम	मूल स्वीकृत लागत	व्यय वित्त समिति द्वारा अनुमोदित लागत
1	एकेडमिक भवन (तीन तल)	5086.21	5016.21
2	ऐडमिनिस्ट्रेटिव भवन (तीन तल)	1821.34	1500.00
3	लाइब्रेरी एवं कम्प्यूटर भवन (तीन तल)	1488.75	1460.00
5	200 बेडेड गर्ल्स हास्टल (तीन तल)	1116.60	1100.00
6	गेस्ट हाउस (कम्पलीट)	601.68	1001.53
7	क्लब एवं जिमनेजियम	267.84	497.95
8	सब स्टेशन	116.25	181.99
9	पम्प हाउस दो अदद	3.97	4.74
10	टाइप–2, 3 एवं 4 के 12 आवास	220.37	532.45
11	टाइप–5 आवास 2 अदद	50.89	70.20
12	वी0सी0 आवास एक अदद	35.52	51.22
13	स्थल विकास कार्य	1678.39	1500.00
14	एचटी लाईन सिफ्टिंग	0.00	81.47
15	लैण्ड यूज फीस	0.00	77.93
16	एनवायरमेन्टल एनओसी फीस	0.00	8.50
17	अतिरिक्त विद्युत कार्य	896.24	4400.00
	प्रायोजना की कुल लागत	14822.75	18884.19

तामीरी इदारा यू0पी0 राजकीय निर्माण निगम ने बताया है कि दर्जबाला तमाम रक़म रू0 174.25 करोड़ का इस्तेमाल उनके ज़रिये किया जा चुका है।

❖ **एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल के मुअज़्ज़ज़ मेम्बरान को यूनिवर्सिटी के तामीराती कामों की तरक़्क़ी से बाखबर किया गया।**

2.13 यूनिवर्सिटी आफिस, कैम्पस के गेस्ट हाउस में दिसम्बर 2011 से मुन्तक़िल होने से मुताल्लिक़ इत्तिला–

कुलसचिव
ख्वाजा [illegible] लखनऊ
उर्दू, अरबी, फारसी विश्वविद्यालय

55

इस यूनिवर्सिटी का कयाम साल 2009–10 में हुआ था और उस वक्त ऑफिस 619, इन्दिरा भवन, लखनऊ, में क़ायम था। यूनिवर्सिटी कैम्पस में गेस्ट हाउस का तामीर आख़िरी मरहला में होने की वजह से यूनिवर्सिटी का ऑफिस तारीख़ 09 दिसम्बर 2011 से गेस्ट हाउस मे मुन्तकिल (स्थानान्तरित) किया गया है, जिससे तामीरी कामों पर कामयाबी के साथ नजर रखी जा रही है।

2.14 यूनिवर्सिटी के लिये इज़ाफ़ी ज़मीन को हासिल करने की तजवीज़–

फ़िलहाल यूनिवर्सिटी के पास तक़रीबन 30 एकड़ ज़मीन हुकूमत के ज़रिये मुहैय्या कराई गई है, लेकिन इतनी कम ज़मीन में यूनिवर्सिटी की पूरी तरह तामीर होना मुमकिन नहीं। लिहाज़ा यूनिवर्सिटी की ज़मीन से लगी हुई प्राइवेट ज़मीन तक़रीबन 30 एकड़ ज़मीन को हासिल (Acquire) करने और सीलिंग की तक़रीबन 6 एकड़ ज़मीन को दुबारा वापस हासिल (Requisition) करने की काम हुकूमती सतह पर अमल में है। यूनिवर्सिटी की इज़ाफ़ी ज़रूरतों व तरक़्क़ी और शोअबए इलाज चलाने के लिये मज़ीद ज़मीन की ज़रूरत होगी। इसलिए यूनिवर्सिटी की सभी ज़रूरतों को मद्देनज़र रखते हुए लखनऊ डेवलेपमेन्ट अथॉरिटी के ज़रिए 120 एकड़ इज़ाफ़ी ज़मीन ख़रीदने की तजवीज़ भी है।

❖ **एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल के मुअज्ज़ज़ मेम्बरान को यूनिवर्सिटी के लिये इज़ाफी ज़मीन के हुसूल की तजवीज़ से बाखबर किया गया और उन्होंने इज़ाफी ज़मीन खरीदने की मन्जूरी दी।**

2.15 हुकूमत के ज़रिये तदरीसी और ग़ैर तदरीसी असामियों की भर्ती के मुतअल्लिक़ इत्तिला और असातिज़ह के ओहदों के इन्तिख़ाबी अमल की तफ़ासील मुहैय्या कराना–

हुकूमत के हुक्मनामा नं0–1477/सत्तर–4–2012–3(47)/2010 तारीख़ 24 अगस्त 2012 के ज़रिये असातिज़ह के 74 ओहदे मंजूर किए गए हैं। जिनकी तफ़सील सफ़हा नं0–51 से 54 तक मुनसलिक है। इन ओहदों में से 37 ओहदों पर तकर्रुरी पहले तालीमी साल में और बक़िया आइन्दा तालीमी साल में की जानी है। तकर्रुरी के लिये इश्तिहार तारीख़ 7 सितम्बर 2012 को अख़बारों (राष्ट्रीय सहारा उर्दू, आग उर्दू, दैनिक जागरण (हिन्दी) और टाइम्स ऑफ इण्डिया (अंग्रेज़ी)) में जारी हो चुका है और दरख़्वास्त फार्म हासिल करने की आख़िरी तारीख़ 08 अक्टूबर 2012 तय की गई है। सेलेक्शन कमेटी के माहिरीन की तकर्रुरी के लिए इज़्ज़तमॉब गवर्नर, उ0प्र0 से हवाला नं0–253 तारीख़ 7 सितम्बर 2012 के ज़रिये गुज़ारिश की जा चुकी है। माहिरीन की तकर्रुरी होने के बाद इन्टरव्यू कराया जाना और तकर्रुरी की कार्रवाई जल्द किए जाने की तजवीज़ है। 56 ग़ैर तदरीसी ओहदों की मंजुरी की तजवीज़ हुकूमती सतह पर अमल में हैं।

❖ **एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल के मुअज्ज़ज़ मेम्बरान की तदरीसी और ग़ैर तदरीसी असामियों की भर्ती और असातिज़ा के ओहदों के इन्तिखाबी अमल की तफसील से बाखबर किया गया।**

2.16 यूनिवर्सिटी का नाम तब्दील करने के मुतअल्लिक़ इत्तिला–

यू0पी0 हुकूमत ने यू0पी0 रियासती यूनिवर्सिटी (तरमीम) ऑर्डिनेन्स 2012 नं0–597/79–वि–1–12–2(क)6–2012 तारीख़ 16 अगस्त 2012 के पैरा–2 के मुताबिक़ यूनिवर्सिटी का नाम ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती (Khwaja Moinuddin Chishti) के नाम पर कर

कुलसचिव
ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
उर्दू, अरबी, फारसी विश्वविद्यालय, लखनऊ

दिया है। अब इस यूनिवर्सिटी का नाम मान्यवर श्री कांशीराम जी, उर्दू, अरबी–फारसी यूनिवर्सिटी के बजाए ख्वाजा मुईनुददीन चिश्ती उर्दू, अरबी–फारसी यूनिवर्सिटी हो गया है।

2.17 यूनिवर्सिटी में ख़िदमतगार कम्पनी के ज़रिए से काम करने वाले अफ़राद के मुताल्लिक़ मंज़ूरी–

फिलवक्त यूनिवर्सिटी मे खिदमतगार कम्पनी मै0 विकास सिक्योरिटी के जरिए 1 ऑफिस असिस्टेन्ट, 1 नायब मुहासिब (Assistant Accountant), 1 स्टेनो, 1 कम्प्यूटर ऑपरेटर, 3 ड्राइवर, 6 चपरासी, और 02 गार्ड की खिदमात ली जा रही हैं। जिनकी तनख़्वाह पर ख़र्च रू0 1,35,580.00 फी माह है।

- एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल मुअज़्ज़िज़ मेमबरान ने मशवरह दिया कि यूनिवर्सिटी इस बात को यक़ीनी बनाये कि खिदमतगारों को जो तन्ख्वाह "खिदमतगार कंपनी" फराहम कर रही है वह यूनिवर्सिटी से तय शुदा पेशकश के मुताबिक़ है या नहीं।

2.18 चार्टर्ड एकाउण्टेन्ट के ज़रिए से ऑडिटेड बैलेन्स–शीट तैयार कराने के मुताल्लिक़ इत्तिला–

यूनिवर्सिटी के माली साल 2009–10, 2010–11 और 2011–12 की ऑडिटेड बैलेन्स–शीट तैयार करने के लिये मै0 आरज़ेडएस0 एण्ड एसोसिएट्स, सी0ए0 न्यू जनपथ काम्प्लेक्स अशोक मार्ग लखनऊ, को माली साल 2010–11 और 2011–12 (साल 2009–10 के लिये कोई मेहनताना नहीं है) के लिए रू0 24,500.00 और सर्विस टैक्स फ़ी साल की शरह से नाफ़िज़ किया गया है।

2.19 मीटिंग के लिए एज़ाज़िया–

एक्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल के मुअज़्ज़िज़ मेमबरान को मीटिंग में शामिल होने के लिये रू0 1000.00 एज़ाज़िया देने की तजवीज़ मंज़ूरी के लिए पेश है।

- एक्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल के मुअज़्ज़िज़ मेमबरान ने रू0 1000.00 (एक हजार) एज़ाज़िया के बजाये रू0 2000.00 (दो हजार) की मंज़ूरी दी।

2.20 दीगर नुक़ात सदरे मोहतरम की इजाज़त से–

- एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल ने निम्न तजावीज़ पेश कीं:
  – चार पांच मेम्बरान पर मुश्तमिल एक कमेटी वाइस चांसलर के ज़रिये बनाई जाये जो उर्दू, अरबी और फारसी के आला तालीमी इदारों को तसलीम करने, उन की मदद करने और उनको आसानियां फराहम करने के तरीक़ों पर ग़ौर करे। साथ ही लड़कियों के लिये फासलाती तालीम को मुमकिन बनाने पर ग़ौर करे। इस सन्दर्भ में कामिल और फाज़िल की डिग्रियों को तसलीम करने की तजवीज़ भी रखी है।

कुलपति
ख्वाजा ... उर्दू, अरबी, फारसी ...

– एक उर्दू और दूसरा अरबी व फारसी रिसर्च इंस्टीट्यूट का कयाम अमल में आये।
– अमीर खुसरो व कबीर पर मुनकिद तौसीअी खुतबे और बाद में किये गये सेमिनार के पर्चों वगैरह को शाय किया जाये।
– एग्जीक्यूटिव काउन्सिल के मुअज्जज मेम्बरान और यूनिवर्सिटी के अराकीन ने हुकूमते यू0पी0 का शुक्रिया अदा करने के लिये निम्न रिज़ाल्यूशन पास किया :–

ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती उर्दू, अरबी–फ़ारसी यूनिवर्सिटी, लखनऊ की एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल से मुतअल्लिक़ लोग मा0 वज़ीरे आला जनाब अखिलेश यादव जी के बेहद शुक्रगुज़ार हैं कि उन्होंने यूनिवर्सिटी का नाम ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के मुबारक नाम पर रखना मन्ज़ूर किया। हिन्दुस्तान के साथ साथ दूसरे मुल्कों के लोग ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती से अक़ीदत रखते हैं। जनाब यादव की हुकूमत ने यूनिवर्सिटी को तामीरी काम के लिये रू0 25 करोड़ की रक़म माली साल 2012–13 के आम बजट में मन्ज़ूर की। यूनिवर्सिटी के पहले तालीमी साल को शुरू कराने के लिये मोहतरम वज़ीरे आला ने असातिज़ा के 74 ओहदे मन्ज़ूर किये और इस साल 50 फीसद असामियों की भर्ती की मन्ज़ूरी दी। इस में दो राय नहीं कि यह यूनिवर्सिटी के हक़ में बेहद अहम क़दम साबित होंगे।

हम एग्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल के मेम्बरान इन अच्छे अक़दामात के लिये जनाब अखिलेश यादव के सरकार के ममनून हैं। इन एहसासात से उनहें मुत्तला भी किया जाना चाहिये।
– आखिर में मेम्बर सेक्रेट्री और यूनिवर्सिटी रजिस्ट्रार जनाब अशोक कुमार ने मीटिंग में शरीक होने वाले तमाम मेम्बरान और अराकीने यूनिवर्सिटी का शुक्रिया अदा किया और मेम्बरान के ज़रिये दिये गये क़ाबिले क़द्र मशवरों और तजावीज़ का इस्तेक़बाल किया। इसके अलावा प्रो0 बलराज चौहान, वाइस चांसलर, डा0 राम मनोहर लोहिया यूनिवर्सिटी, लखनऊ और यूनिवर्सिटी के अराकीन का शुक्रिया अदा किया कि उन्होंने मीटिंग को कामयाब बनाने के लिये हर मुमकिन तआवुन किया।

कुलसचिव
ख़्वाजा मुईनुद्दीन...
उर्दू, अरबी, फारसी वि...